Vol 6 Issue 9 October 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 9 | October - 2016

Indian Streams Research Journal

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा में व्यावहारिक चुनौतियां

डॉ रश्मि गोरें[1], शिव नारायण[2]

[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर.

[2]शोध छात्र, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,कानपुर.

शोध–सारांश

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्न चिह्न उठते रहते है। समय–समय पर गठित आयागों/समितियों ने गुणवत्ता बढ़ाने हेतु अपनी सिफारिशें सरकार को दी। अध्यापक शिक्षा पर जे० एस० वर्मा समिति ने अगस्त 2012 में अध्यापक शिक्षा को दो वर्षीय करने की सिफारिस की। अध्यापक शिक्षा को दो वर्षीय करने पर लम्बी बहस छिड़ी रही। जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय अध्यापक ने अध्यापक शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाने के लिए अध्यापक शिक्षा के द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम को शिक्षण सत्र 2015 से लागू करने की बात स्वीकार कर ली गयी। अध्यापक शिक्षा के द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम को शिक्षण सत्र 2015–17 से लागू कर दिया गया। अध्यापक शिक्षा के द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् द्वारा जारी दिशा निर्देशों में तीन विस्तृत क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया। आधारिक क्षेत्र, शिक्षणशास्त्र और इण्टर्नशिप एवं शिक्षण अभ्यास कार्य। संसार के किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में कई व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्याएं ही चुनौतियों के उत्पन्न होने के लिए आधारशिला का कार्य करता है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र आज असंख्य महत्वपूर्ण एवं विचारणीय चुनौतियां हैं– पाठ्यक्रम को समय से पूरा कराने की चुनौती, छात्र उपस्थिति की चुनौती, इण्टर्नशिप एवं शिक्षण अभ्यास कार्य की चुनौती एवं गुणवत्ता वृद्धि की चुनौती। जिसके समाधान के लिए प्रयत्न करना प्रत्येक अध्यापक शिक्षक एवं भावी अध्यापक/ अध्यापिकाओं के लिए दायित्व बन जाता है। शिक्षक को समाज द्वारा राष्ट्र निर्माता का दर्जा दिया गया है। अतः अध्यापक का कार्य और अधिक महत्वपूर्ण तथा उत्तरदायित्वपूर्ण हो जाता है।

प्रस्तावना :

भारत 20.91 करोड़ से अधिक किशोरों के साथ दुनिया की समूची जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत किशोर भारत में विकसित हो रहे हैं।

तलिका 1 : किशोर जनांकिकी

	बालक	बालिकायें	कुल योग
10–14 वर्ष	5.73	5.23	10.96
15–19 वर्ष	5.28	4.67	9.95
कुल योग	11.01	9.90	20.91

(संख्या करोड़ में)
स्रोतः भारत की जनगणना 2011

20.91 करोड़ किशोरों के शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार शिक्षक छात्र अनुपात 1 : 30 को प्राप्त करने के लिए 69.70 लाख शिक्षकों की आवश्यकता होगी। जिससे गुणावत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा सके।

शिक्षा मानवीय विकास का प्रारम्भिक विन्दु है। किसी भी प्रगतिशील राष्ट्र में शिक्षा का मूल कर्त्वय है कि वह समाज में ऐसी विचार को विकसित करे, जिससे देश में लिंग भेद, राष्ट्रीय एकता, जातिवाद और क्षेत्रीयता की संर्कीणता सम्बन्धी मत भेदों को दूर किया जा सके। अध्यापक शिक्षा में गुण्वत्ता केवल भौतिक संसाधनों के उपलब्ध कराने से ही नही आ सकती, जब तक मानवीय संसाधनों –शिक्षा मंत्री, शिक्षा सचिव, शिक्षाविदों, शिक्षण संस्थानों के प्रबन्धकों, प्राचार्यों, लिपिकों तथा अध्यापक शिक्षक एवं भावी अध्यापक/ अध्यापिकाओं में आर्दशवादी दृष्टिकोण को न विकसित किया जायें।

वैदिक काल में सभ्यता और संस्कृति राष्ट्र की पहचान थी और भारत को विश्व गुरू माना जाता था। इस काल में अध्यापक स्वाध्यायी अैर सच्चरित्र व्ययिक्त ही गुरू हाते थे। गुरूकुल प्रणाली में पूर्ण स्वामित्व के साथ पूर्ण उत्तरदायित्व जुड़ा था। बौद्धकाल में शिक्षक बनने के लिए उच्च शिक्षा के बाद 8 वर्ष की बौद्ध धर्म की शिक्षा के साथ बौद्ध संघों के नियमों का कठोरता से पालन करना। जबकि मध्यकाल में कुछ समय शिक्षण कार्य अपनी वास्तविकताओं से भटक भी गया। आज अधिकांश शिक्षको में शिक्षण कार्य के प्रति बचनवद्धता, समर्पण एवं प्रतिवद्धता का अभाव सा हो गया हैं। इन चुनौतियों को शिक्षण कार्य के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता हैं। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्ण ने एक बार कहा था कि इमारतों से शिक्षण संस्थानों की पहचान नही है, बल्कि शिक्षक व छात्र जो ज्ञान

साधना में लगे है वही शिक्षण संस्थानों की आत्मा है।

महात्मा गाँधी ने अध्यापकों के सन्दर्भ में कहा है कि –"शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों से आत्मा से सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए।" अध्यापक कक्षा में जितना समय देते हैं, उससे अधिक समय उन्हे कक्षा से बाहर देने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में अध्यापकों की कक्षा से बाहर समय देने की आवश्यकता एवं रूचि ही नही है। आज के असिसटेण्ट प्रोफेसर एवं एसोसिऐण्ट प्रोफेसर अधिकांश समय एपीआई स्कोर अर्जित करने करे लिए कक्षा में कम गोष्ठी, संगोष्ठियों और पैनलों में अधिक रहते हैं। अध्यापकों की आर्थिक महत्वाकांक्षा, शिक्षा का व्यावसायीकरण , मशरूम की तरह उगते शिक्षण संस्थान, गुणवत्ता में कमी होना, प्लेसमेन्ट न हो पाना आदि व्यावहारिक चुनौतियां है।

अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां :

अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम के दो वर्षीय करने पर लम्बी बहस छिड़ी रही जिसके परिणाम स्वरूप अध्यापक शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाने के लिए अध्यापक शिक्षा के द्वि–वर्षीय पाठ्यक्रम को शिक्षण सत्र् 2015–17 से लागू कर दिया गया। अध्यापक शिक्षा में निम्न व्यावहारिक चुनौतियों से सामना होता है–

- शिक्षण कार्य में नवीन उपागमों के प्रयोग की चुनौती
- वयैक्तिक विभिन्नताओं की चुनौती
- टयूटोरियल प्रणाली के प्रयोग में चुनौती
- शिक्षकों द्वारा मेंटर की भूमिका में चुनौती
- परामर्शदाता की भूमिका सम्बन्धी चुनौती
- फैक्स , ई–मेल भेजने में कठिनाई
- समाज के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव
- अनुरूपित सामाजिक कौशल शिक्षण का अभाव
- अभिक्रमित अधिगम सामग्री निमार्ण की चुनौती

शिक्षण अभ्यास एवं इण्टर्नशिप कार्य में चुनौती :

प्रत्येक स्तर पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का यह सर्वाधिक उपेक्षित पक्ष रहा है। पाठ योजना निमार्ण से लेकर अध्यापकीय निरीक्षण, अवधान, समय एवं विषय वस्तु का समनवय, विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रत्येक अध्यापन सम्बन्धी व्यावहारिकता को स्वयं वास्तविक स्थिति में करने के पहले पूर्वाभ्यास का अत्यधिक महत्व होता है, जिससे छात्रों का समय एवं श्रम व्यर्थ नष्ट न हो।

पुराने पाठयक्रम में शिक्षण अभ्यास के लिए 10 सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजनायें एवं 20 –20 व्यापक पाठ योजनाओं का अभ्यास कार्य करना होता था अब परिवर्तित द्विवर्षीय पाठयक्रम में प्रथम वर्ष 20–20 पाठ योजना और द्वितीय वर्ष में 16 सप्ताह इण्टर्नशिप करनी होगी। इतने समय के लिए कक्षाओं का उपलब्ध होना सबसे बड़ी चुनौती है।

आन्तरिक मूल्यांकन कार्य में चुनौती :

परिवर्तित द्विवर्षीय पाठयक्रम के प्रथम वर्ष में 150 अंकों का आन्तरिक कार्य के लिए है। शिक्षण अभ्यास निरीक्षण और आन्तरिक मूल्यांकन के लिए कोई सर्वमान्य मूल्यांकन पद्धति नही है। और न ही प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए कोई सर्वमान्य मानक या निर्दिष्ट पद्धति विद्यमान है। जिसके कारण पक्षपात के आरोप लगते रहते है।

शिक्षण अभ्यास कार्य, निरीक्षण और आन्तरिक मूल्यांकन के लिए मानकीकृत मूल्यांकन विधियों को प्रयोग में लाया जाना चाहिए।

कार्याधारित दक्षता में चुनौती :

आधुनिक अध्यापकीय तैयारी के लिए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् द्वारा दक्षता के साथ ही कई प्रतिबद्धता के क्षेत्रों स्पष्ट करने के लिए 1978 कें अपने दस्तावेज 'टीचर एजूकेशन करीक्यूलम :ए फ्रेमवर्क ' में 'दक्षता आधारित और प्रतिबद्धता उन्मुख गुणवत्ता मूलक विद्यालय शिक्षा हेतु अध्यापक शिक्षा' में शीर्षक उल्लेख किया। जिसमें निम्न प्रमुख्य प्रतिबद्धतायें दर्शायी हैं–

- अधिगमकर्ताओं के प्रति प्रतिबद्धता
- समाज के प्रति प्रतिबद्धता
- आजीविका के प्रति प्रतिबद्धता
- आजीविकागत क्रिया कलाप में उत्कृष्टता सम्बन्धी प्रतिबद्धता
- मूलभूत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

प्रत्येक अध्यापक को अपनी अकादमिक प्रतिवद्धता स्थापित करनी होगी। उसे अपने तात्कालिक प्रलोभनों को छोड़ना पडेगा। जब किसी शिक्षक की प्रशंशा की जाती है, तो उसका आत्मविश्वास और बचनबद्धता और बढ़ जाती है।

छात्र उपस्थिति की चुनौती :

एक वर्षीय पाठयक्रम में छात्रों की कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य थी। द्विवषीय पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक कार्य में 80 प्रतिशत उपस्थिति तथा 16 सप्ताह के इण्टर्नशिप में 90 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य कर दी गयी है।

छात्रों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए संस्था प्रधानों, अध्यापकों एवं अभिभावकों को छात्रों को कालिज आने के लिए अभिप्रेरित किया जायें।

व्यवहारगत निष्पादन कार्य में चुनौती :

अध्यापक शिक्षण कार्य के क्षेत्र में अधिकांश शिक्षकों की शिक्षण निष्पादन गुणवत्ता निम्न स्तर की होती है। जिसका कारण अध्यापकों का शिक्षण कार्य के प्रति उदासीन दृष्टिकोण उत्तरदायी होता है।

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले नित्य नवीन परिवर्तन और रुपान्तरण के लिए अनुभव

प्राप्त करने की आवश्यकता अधिक होती है। इसके लिए आजीविकागत सभाओं में सहभागिता, शोध पत्रिकाओं के सदस्य बनना , उत्तरदायित्व, गुणवत्ता गियन्त्रण, मूल्याकंन एवं शिक्षण आचार संहिता का पालन उसके व्यावहारिक निष्पादन को सवल बना सकते हैं।

षिक्षण कार्य में नवीन उपागमों के प्रयोग की चुनौती :

शिक्षण में तकनीकी के प्रवेश से नवीन उपागमों का प्रयोग किया जाने लगा जैसे– मल्टी मीडिया एप्रोच, पर्सनलाइज्ड सिस्टम ऑफ इन्स्ट्रक्शन, कम्प्यूटर असिस्टैण्ट इन्स्ट्रक्शन, इण्टरनेट, ई–मेल, अन्तःक्रिया प्रणाली, सिस्टम एप्रोच, अभिक्रमित अनुदेशन प्रणाली, सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण मशीन आदि।

शिक्षण कार्य में नित्य नवीन नवाचारों के प्रयोग की चुनौती :

आज शिक्षण कार्य को पेशे के रूप में मान्यता मिल रही है। शिक्षण पेशे में सफल होने के लिए अध्यापकों को स्वयं को शिक्षण कार्य में प्रयोग आने वाले नवीन नवाचारों के प्रयोग की चुनौती होती है। शिक्षण कार्य में वीडियों कानफ्रेन्स, टैली कानफ्रेन्स आदि।

द्विवर्षीय शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था न होना : एक वर्षीय बी० एड़० पाठ्यक्रम में अधिकांश स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थानों के पास मनोविज्ञान, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, वाणिज्यशास्त्र गृहविज्ञान आदि के लिए प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था नही थी। द्विवर्षीय शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था करना दूर की कौड़ी है। बल्कि अधिकांश शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं को वर्ष भर में मुशकिल से एक या दो बार ही विशेष अवसरों पर खोला जाता है।

द्विवर्षीय शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था के कठोर नियम बनाये जाये। तथा पैनलों जाने बाले एक्सपर्ट ईमानदार एवं शिक्षक आचार संहिता का पालन करने वाले हो। जिससे विद्यार्थियों का सार्वांगीण विकास में मार्गदर्शन कर सके।

निष्कर्ष :

आज हमारे देश में द्विवर्षीय (बी० एड़०) अध्यापक शिक्षा को अनेक कारक जैसे– आर्थिक, सामाजिक एवं कई प्रकार की मनोजनिक परेशानियों से संघर्ष करना पड़ रहा है। द्विवर्षीय (बी० एड़०) अध्यापक शिक्षा में समावेशित दृष्टिकोण से आत्मविश्वास तथा आत्म सम्मान की भावना मजबूत होगी। द्विवर्षीय (बी० एड़०) अध्यापक शिक्षा में सहकारिता आधारित विधियों के प्रयोग से विद्यार्थियों में सामुदायिक भावना का विकास होगा। अतः आज के समय में समावेशी शिक्षा एक महती आवश्यकता बन गयी है। आज समाज में लोगों के दृष्टिकोण में धर्म, वर्ग, जाति, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक से ऊपर उठकर एक समावेशी समाज की सोच और भावना विकसित करने की जरुरत है ताकि वर्षों से उपेक्षित समाज के उन लोगों को भी समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जा सकें और इसके लिए ठोस कदम उठाने होंगे। वंचित वर्ग को अध्यापक शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ने की क्षमता विकसित करने के अवसर उपलब्ध कराने होंगे। जिससे द्विवर्षीय (बी० एड़०) अध्यापक शिक्षा में आने वाली विभिन्न चुनौतियों का मुकाबला स्वयं कर सकें। अब सभी शिक्षाविदों, समाजसेवियों का ध्यान टी०एस०आर० सुब्रहमण्यम् समिति द्वारा जून 2016 में सौपे गये राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2016 के ड्राफ्ट पर 27 अगस्त 2016 को शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। जिसमें द्विवर्षीय (बी० एड़०) अध्यापक शिक्षा पर भी चर्चा करायी गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1.त्रिपाठी, विवेकनाथ, (2015); अध्यापक शिक्षा में प्रतिवद्धता, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रैल 2015, वर्ष 35 अंक 4 पृष्ठ 18–27.

2.भट्टाचार्य , जी० सी०, (2015); अध्यापक शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।

3.भारत की जनगणना 2011

4.छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2016 के ड्राफ्ट पर 27 अगस्त 2016 आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के विचार के अंश।

5.टीचर एजूकेशन करीक्यूलम :ए फ्रेमवर्क 1978, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली।

6.दैनिक जागरण द्वारा आयोजित उत्तर–प्रदेश जागरण कुलपति फोरम लखनऊ, 27 सितम्बर 2016 के विचार–विर्मश के कुछ अंश।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org